SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

21 वी सदी में प्रांसगिक होता दर्शनशास्त्र

सन्दीप अवस्थी, शिक्षाविद्,
अध्यक्ष, भारतीय विद्या केन्द्र, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
सन्दीप अवस्थी, शिक्षाविद्,
अध्यक्ष, भारतीय विद्या केन्द्र, राजस्थान,
राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 27/07/2020
Revised on : -----
Accepted on : 05/08/2020
Plagiarism : 00% on 28/07/2020

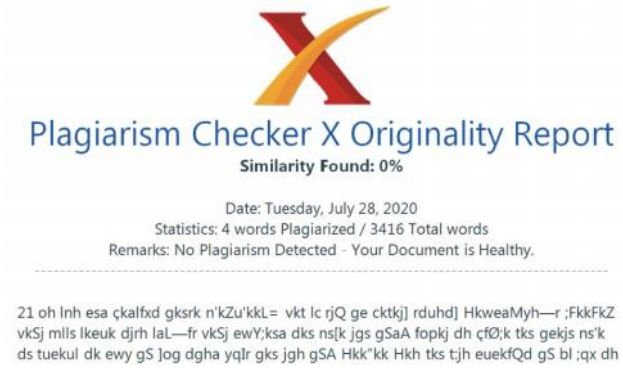

शोध सार :

आज सब तरफ हम बाजार, तकनीक, भूमंडलीकृत यथार्थ और उससे सामना करती संस्कृति और मूल्यों को देख रहे हैं। विचार की प्रक्रिया जो हमारे देश के जनमानस का मूल है, वह कहीं लुप्त हो रही है। भाषा भी जो जरूरी मनमाफिक है इस युग की वही बची हुई हैं। क्योकि उपयोगितावाद का सिद्धांत लागू है। जॉन स्टुअर्ट मिल वाला ही गुणात्मक भेद वाला ही नही बल्कि बेंथम वाला भी लागू है। अधिकतम सुख चाहे वह कैसे भी मिले। यानी महात्मा गांधी की तरह साध्य और साधन की शुद्धता नही बल्कि कैसे भी करके अधिकतम सुख,सुविधाएं चाहना वह भी अपने लिए। यह स्वार्थमूलक सुखवाद और अनियंत्रित सुविधाओ की होड़ हमे वही ले जाती जहां बाजार और उसके आका बहुराष्ट्रीय कंपनियां ले जाना चाहती हैं। जहां सोचने तक का समय न मिले और आप बस चलते, दौड़ते जाओ। जहां मन में बेचौनी तो हो,व्याकुलता हो, प्रश्न उमड़े परन्तु कोई जवाब देने वाला न हो। कोई इंसान पास न हो। अकेला हो जाए व्यक्ति। और फिर क्यो न जवाब भी, हर जवाब भी तकनीक ही हमे दे दे तो ? यही हुआ और पूरे विश्व को बेवकूफ बनाने के साथ हिंदुस्तान पर इस तकनीक का विशेष आगमन हुआ। क्योकि यही विश्व गुरु था,है (कुछ वाम मित्रो को तकलीफ होगी पर यही सच है) तो इससे निपटने की विशेष तैयारी। तो यहां से भी विचार,सोच को गायब करदो। हम सोचते तब तक तो तकनीक और बाजारवाद की आंधी ने कब्जा ही कर लिया। हर प्रश्न का उत्तर गूगल। वह जो कहे वही सत्य। कल को वह कह दे कि आप मार गए हैं तो हम सत्य में मरा समझ लेंगे खुद को। और दूसरा कहेगा की तुम जिंदा हो तो भी हम नही मानेंगे। ऐसी जड़ता और अभद्रता को सदियो पहले भारतीय मनीषियों ने जान लिया और उतपत्ति की वेदो, उपनिषदो, पुराणों आदि की। उनमें हर एक समस्या का समाधान तर्कपूर्ण ढंग से दिया और बताया। लेकिन मनीषियों ने कुछ सदी बात विचार किया कि हर जन्मानस

शास्त्र प्रवीण हो, पाली, प्राकृत भाषा और संस्कृत प्रवीण हो यह जरूरी नही। हर नर नारी गुरुकुल जाए और दीक्षा ले सम्भव नही। परन्तु वैचारिकी और समय के बदलावों को समझना और उससे नकारत्मकता का मुकाबला करना और अपने विचार परम्परा के साथ परिवार को जोड़कर रखना तो हर एक की आवयश्यक्ता है। फिर ? तो सरल भाषा मे इन सभी वैदिक ग्रंथो और लोक विचारों, ज्ञानियों के विचारों को लेकर दर्शन बनाए गए। ऐसे साररूपी अमृत जिसे आम व्यक्ति भी सहजता से समझ और सीख सके हर बात और मन्तव्य को। यह दर्शन की महत्ता और उतपत्ति हुई। जिसमे हर काल में अनेक चिंतक, विचारक जुड़ते रहे चार्वाक, महावीर, बुद्ध, आदि शंकराचार्य से लेकर अरबिंदो, दयाकृष्ण, यशदेव शल्य तक।

मुख्य शब्द :

नारी, गुरूकुल, वैचारिक, बाजार, तकनीक, भूमंडलीकृत।

दर्शन क्या है ? :

दरअसल दर्शन को लेकर बहुत सी विसंगतियां, रूढ़ियाँ और भृम की स्तिथि बनाई गई। कि यह काफी गूढ़, ऊपर से निकल जाने वाला, और स्वयं नही समझ आने वाला है। (जबकि यह बहुत रोचक और स्वतः आनंद से पढ़ने वाला है)। सबसे मजेदार यह कि जो इसे पढ़ते या पढ़ाते हैं, वह थोड़े खिसके हुए (किधर खिसके?) होते हैं। (जबकि सच यह है कि इसे पढ़ने और पढ़ाने मात्र से आत्मिक आनंद और सुख की अनुभूति होती है)। इससे बढ़कर यह कि यह जीवन में काम ही नही आता। (जबकि यह सदियो से आज तक हर जगह जीवन से जुड़ा और उपयोगी विषय है आगे विस्तार से बताएंगे)।

यहां मैं दर्शन का व्युत्पित्तजन्य अर्थ स्पष्ठ कर दूं। यह दृश् धातु से बना जिसका अर्थ है देखना। देखना अर्थात् सभी स्थितयों को देखना, परखना, विश्लेषित करना (डरे नही यह सारी प्रक्रिया 2 मिनट में हमारा मस्तिष्क कर लेता है) बता रहा हूँ। अन्य और सबसे महत्वपूर्ण अर्थ है किसी चीज का सार,उसका नवनीत। जो आज के ही नही वरन कई सदियों से मानवजाति के उपयोग का है। क्योकि आज ही नही बल्कि जबसे समय का अभाव मानव मन ने जाना, वह थोड़ा सा अधीर, शीघ्रगामी हो गया। तो दर्शन आपको मीमांसा (समीक्षा) करके निर्णय पर पहुंचने का pituteri gland) को सक्रिय करता है। साथ ही वह हमें एक ही वस्तु की विभिन्न परिस्थितियों में सापेक्षता बताता है।

मानव और पशु पक्षियों में मुख्य अंतर बुद्धि और सोचने की क्षमता का ही है। दर्शन हमे सीखने के, ज्ञान के योग्य बनाकर स्वतः स्फूर्त जागरूक बनाता है, आत्म साक्षात्कारी बनाता है। जहां हम अपनी निर्णय क्षमता और योग्यता पर भरोसा कर सकते हैं। निसंदेह प्रारम्भ में योग्य गुरुओं और किताबो की भूमिका से इनकार नही किया जा सकता।

यह हमें विशेषज्ञता प्रदान करता है। तभी तो आप देखते हैं कि किसी भी विषय मे आप M.PHil (master of philosophy), पीएचडी (डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी) करें उसमे दर्शन शब्द आता है। अर्थात् आप इसमे दक्ष हुए, पारंगत हुए।

यही सब बातें और उपयोगिता इस विषय को लोकप्रिय बनाती और दूसरी तरफ स्वार्थी शक्तियों की आंखों की किरकिरी भी। तभी वह अफवाहें (ऊपर उल्लेखित) चलीं। हालांकि बहुत सी स्वतः ही खत्म हुई। ग्रीक भाषा में फिलॉस यानी ज्ञान, बुद्धि और सोफिया यानि ग्रीक देवी से मिलकर बना है फिलॉसॉफी।

हम पाश्चात्य दर्शन और इसके विभिन्न आयामो को यहां न लेकर भारतीय दर्शन की उपादेयता और प्रांसगिकता पर केंद्रित हैं।

अब यह स्पष्ठ हुआ कि चीजों, भूमण्डलीकृत अर्थव्यवस्था जिसमे विचारों को भी सीमित किया गया है। इस अर्थ में कि वह जो सोचना, जितना कम से कम हो वह विचार करना ही सिखा रहे हैं ताकि उनके अपने उपभोक्ता बनाने के वैश्विक अभियान में हिंदुस्तान से कोई रुकावट न पड़े। और 21वी सदी के दूसरे दशक तक वह इस

अभियान में सफल भी हुए। परन्तु इस तीसरे दशक के प्रारम्भ में स्तिथियाँ बदलने लगी। विचार और किताबे, संस्कृति फिर सामने आई। और साथ आया दर्शन, उन्हें समझकर मजबूत धरातल का अहसास से युक्त करके आत्मविश्वासी बनाता भारतीय दर्शन। बहुजन सुखाय बहुजन हिताय की विचारधारा के साथ।

दर्शन : शास्त्र नही शस्त्र :

यहां हम यह स्पष्ठ करेंगे कि दर्शनशास्त्र की विशेषताएं और तार्किकता उसे जनमानस में लोकप्रिय बनाती आई है। साथ ही उन्हें जो दिखाई दे रहा है उसके पीछे भी (और दाएं बाएं भी) देखने की दृष्टि देता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में पिरोता है यह बुद्धि का विषय भारतीय दर्शन। इसके अनेक उपविभाग यथा शिक्षा दर्शन से लेकर तार्किकता आदि हैं। हम वैदिककाल से प्रारम्भ करके सभी 9 दर्शनों नास्तिकवादी त्रेयी और षड्दर्शन की बात संक्षेप में करते हैं। स्वतः ही यह स्पष्ठ होगा कि वर्तमान विश्व के सारे पंथ इससे संचालित हैं। क्योकि मनुष्य है तो बुद्धि भी है, विचार भी है।

(क) प्रमुख दर्शन और उनकी मुख्य उक्तियाँ :

वैदिककाल में ही यह ऋषिमुनियों की विचारधारा थी कि आमजन में वेदो की प्रमुख सूक्तियों और उपयोगी श्लोकों आदि का सार सहजसरल भाषा मे पहुंचे। यह भी स्पष्ठ था कि समाज, विशाल अखंड भारत में अनेक वर्ग और विचारों के व्यक्ति हैं। मुंडे मुंडे मति भिन्ना। तो सबको समाहित करती भी और पृथक पृथक भी जोड़ती विचारधाराएं आईं।

नास्तिकवादी दर्शन :

यह वेदो को नही मानते। चार्वाक, जैन और बौद्ध यह तीन हैं। हालांकि बाद में जैन और बौद्ध दर्शन क्रमशः महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध को भगवान ही मानने लगे। इन दोनों के मना करने के बाद भी। दरअसल हमे कोई चाहिए होता है हमारा मास्टर, गॉड जिसके ऊपर हम अपने डर, नाकामी और कमियों को थोप सकें।

चार्वाक दर्शन उस काल में काफी लोकप्रिय हुआ जब भारत कर्मकांडो और पुरोहितों के जाल में फंसा था। पुनर्जन्म, स्वर्ग, दान पुण्य, आत्मा और ईश्वर सबका खंडन इन्होंने किया। आचार्य ब्रहस्पति की उक्ति इस दर्शन का सार रही, ''**प्रत्यक्षमेंव किम प्रमाणं**'' इससे गौर करे सब कुछ स्वर्ग, नरक, ईश्वर, देवता सब धराशाही हो गए। हालांकि वितंडा के कारण यह नही समझा सामान्य लोक की इनसे पूर्व वेदांत दर्शन यह उद्धरणों से सत्यापित कर चुका की अहम ब्रह्मास्मि, तत्वमसि। सभी गरीब, अमीर, आदि में एक ही आत्मा है। और वह स्वंय ब्रह्म है। लोकायत से विख्यात यह दर्शन इन्द्रियजन्य सुख भोग की हिमायत करता जल्द ही लुप्त हो गया। ''याजजीवेत.....ऋण कृ त्वा घृतं पीवेत।'' (ब्रहस्पति सूत्र)। जैसी लोक को उक्ति देकर उसे लगभग विचारशून्य बना डाला।

जैन दर्शन, संस्थापक ऋषभदेव लेकिन पच्चीसवें तीर्थकर महावीर स्वामी ने इसे जन जन में लोकप्रिय बनाया। अष्टांग मार्ग, सत्य, अहिंसा, अस्तेय से होता हुआ समाधि तक व्यक्ति को संयमी जीवन और हर चर अचर में जीव को मानने के कारण आज भी माना जाता है। परन्तु बाद में कई कुरीतियो यथा संथारा, बाल्यावस्था में ही सन्यास आदि रही।

बौद्ध दर्शन इसलिए ईसा पूर्व लोकप्रिय रहा कि इसने जीवन को नश्वर माना। क्षणिकवाद, चार आर्य सत्य और दुखों से निवृति का मार्ग बताया। कोई उपदेश संकलित न करके केवल प्राणिमात्र की रक्षा और न्यूनतम आवयश्यक्ता का मार्ग दिया। अप्प दीपो भव्व, (खुद का प्रकाश बनो) वाला यह दर्शन तत्कालीन मौर्य, गुप्त सम्राटों की छत्रछाया में जापान, चीन, सुमात्रा, कम्बोडिया सहित कई देशों में आज भी पल्लवित है।

आस्तिकवादी दर्शन : षड्दर्शन :

यह छह हैं। वेदो को मानने के कारण इन्हें आस्तिकवादी कहते हैं। यह ध्यान रहे कि ईश्वर को नही बल्कि वेदो, पुस्तको, ज्ञान को। इस बुद्धिमत्तापूर्ण विचार से भारतीय जन्मानस में दर्शन का उद्भव हुआ।

सबसे प्राचीन दर्शन माना गया सांख्य दर्शन। पच्चीस तत्वों के साथ सम्पूर्ण जीवन,जगत की उत्पत्ति समझाता। महृषि कपिल मुनि ने प्रकृति, जड़, अचेतन परन्तु सक्रिय और पुरुष (आत्मा,सेल्फ), चेतन परन्तु निष्क्रिय से सरल और विलक्षण ढंग से समझाया। साम्यावस्था जब भंग होती है तो दोनों प्रमुख तत्व नजदीक आते हैं और सृष्टि का व्यापार प्रारम्भ होता है। प्रारम्भ में साम्यावस्था कैसे और क्यो स्वतः ही भंग होगी? फिर छब्बीसवाँ तत्व ईश्वर माना गया। कुछ लोग इसी वजह से इसे नास्तिकवादी कह देते हैं। ईश्वरकृष्ण रचित सांख्यकारिका में इन सबकी विषद चर्चा है।

इसी से जुड़ा है योग दर्शन, जीवन को स्वस्थ, निरोग रखते हुए अवसाद (डिप्रेशन) आदि से दूर रखकर जीवन की राह पर आगे बढ़ने का संदेश देता। महृषि पातंजलि (बाबा रामदेव से लगभग 2000 वर्ष पूर्व। इन्ही से बिना कॉपी राइट चुकाए बाबा विश्व भर में योग पताका भी फहरा रहे और वही औषधियों को बेच भी रहे) ने अष्टांग मार्ग के माध्यम से नियमित और संयमी दिनचर्या इस आर्ष देश को दी। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, और समाधि। इन चरणों से हम सम्पूर्ण शरीर और चित्त को एकाग्र और निरोग रख सकतें है ।

न्याय दर्शन, गौतम मुनि ने दिया।इसमे मुख्यतः तार्किकता और जीवन के विभिन आयामो में विवेचना पूर्ण ढंग से तर्क से विभिन्न वादों, विचारों का खंडन मंडन बताया गया। साथ ही इसके पूरक वैशेषिक दर्शन में महृषि कणाद द्वारा परमाणु सिद्धान्त के द्वारा सृष्टि प्रक्रिया की सारगर्भित जानकारी दी गई। जिसे आगे डाल्टन आदि कई पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने सैंकड़ो साल बाद अपनाया।

अब इन सब बातों और वेदो, उपनिषदो के विचारों को विश्लेषित करना और कर्मकांड मार्ग, वैदिक विचारों को बताना भी जरूरी था। तो उसके लिए मीमांसा दर्शन, संस्थापक महृषि जेमिनी दिया गया। बहुत ही दिलचस्प ढंग से वैदिक कर्मकांडो, श्लोकों, उनके प्रभाव, उपयोगिता को बताता है।

अब यहां से आगे वेदो की ऋचाओ और अमृत रूपी सार उपनिषदो के ज्ञान और विचारों का, पद्धतियों का सही और शुद्ध भाषा मे प्रस्तुत किया गया। इस छठे और अंतिम दर्शन को उत्तर मीमांसा या वेदांत दर्शन नाम दिया गया। यह सबसे लोकप्रिय और सर्वग्राही दर्शन आज भी हमारे जन्मानस में व्याप्त है।

वेदांत दर्शन :

यह दर्शन सदियो से भारतीयता और हमारे विचारों, संस्कृति की रक्षा कर रहा है। और यही बताता भी है कि कैसे हम असत्य, अतार्किक, अनित्य को सत्य, नित्य मानकर भृम के जाल में फंसते जा रहे हैं। कैसे हमारी मूल प्रवृति को भुलाकर बाजार रूपी माया हमे घेरती जा रही है। इन सबके साथ अपनी तार्किकता से यह हमें सभी प्रश्नों यथा हम कोंन हैं? (अयमात्मा ब्रह्म) ,तत्वमसि, यह जगत क्या है? इसकी वस्तुएं क्या हैं? (मायावाद, आचार्य शंकर की व्याख्या), हमारा क्या लक्ष्य है ? (मोक्ष प्राप्ति, मुक्ति)। यह कैसे मिलेगा? (साधन चतुष्टयः), क्या मोक्ष, दूर, स्वर्ग में है? इस प्रश्न का उत्तर ही उपभोक्तावादी संस्कृति की नींद उड़ा देता है। वह उत्तर है कि नही, मोक्ष स्वर्ग में या हमसे दूर नही। यह प्राप्तस्य प्राप्ति है (ब्रह्मसूत्र, शंकर भाष्य, चतुर्थ श्लोक) अर्थात् हम अपने मूल स्वरूप में नित्य मुक्त है। सहज, सरल हैं। हमारी इच्छाएं सीमित हो और हम भ्रम में न आए।

वेदांत दर्शन कई अलग अलग विचारधाराओं (different school of vedanta) का समुच्चय है। सर्वप्रथम विशिष्टाद्वैत, (आचार्य रामानुज), अद्वेत वेदांत (गौड़पाद, आचार्य शांकर), शुद्धाद्वेत (आचार्य मध्वाचार्य), आदि हैं। पर प्रमुखतम और सर्वग्राह्य आचार्य शंकर द्वारा प्रवर्तित अद्वेत वेदांत की ही है। जिसमे यह बताया गया कि मायारूपी जगत और उसकी शक्तियों आवरण और विक्षेप से मनुष्य (इसे जीवात्मा पढ़ा जाए) नश्वर को सत्य, गलत को सही, अनित्य को नित्य और अपने शरीर और उसके अधिकतम सुख को ही सत्य मान लेने की भूल अज्ञानतावश करता है। जबकि वह अपनी आत्मा को भूल जाता है जो ब्रह्म ही है। अपने अंतःकरण में स्तिथ आत्मज्ञान को पूर्वजन्म के कर्मों के कारण भूल जाता है। अनेक दुखो और कष्टों, (लोन लेना, चुकाना, गाड़ी, बंगला, फैक्ट्री, नौकरी, नाम आदि को ही सत्य मान उलझ जाता है जरा मरण के चक्र में), असंख्य लोग कई जन्मों तक जब तक अज्ञान दूर नही होता भटकते रहते हैं। और कई इसी जन्म में, जीवित रहते हुए ही मोक्ष पा लेते हैं। प्राप्तस्य प्राप्ति तो वह योग्य

गुरु के पास ज्ञान के लिए जाते हैं। ज्ञानमार्ग पर चलकर सहजता से यह ज्ञान पा लेते हैं कि वह वास्तव में मुक्त हैं। और सांसारिक मायाजाल को समझ जाते हैं। फिर उन्हे चमक दमक, दिखावटी मार्ग, धन दौलत, कंचन कामिनी आदि कुछ भी प्रभावित नही करता। उनके कर्म होते हैं पर वह कर्मफल से मुक्त होते हैं। साधन चतुष्टय के माध्यम से योग्य गुरु, जो स्वयं मुक्त है, बताता है ।

1. **शमदमदिशतसम्पट :** विभिन्न इच्छाओं, काम, क्रोध, लोभ, मद आदि प्रवर्तियो का शम, दम आदि के द्वारा नियंत्रण।
2. **नित्यनित्यवस्तुविवेक :** अर्थात् नश्वर, माया के वशीभूत (बाजार, उपभोक्तावाद पढ़ें) होकर अस्थायी लौकिक वस्तुओं, सम्बन्धो की सच्चाई समझना। साथ ही स्थायी, नित्य, अविनाशी अपनी मूल आत्मा, योग्य गुरु को जानना।
3. **इहाभुत्रार्थभोगविराग :** संसार के समस्त कार्य व्यापार, भौतिक सुख सुविधाओं से निर्लिप्त रहना।
4. **मुमुक्षुत्व :** इन तीनो ज्ञान को आत्मसात करके साधक इस योग्य बन जाता है कि वह अपना वास्तविक स्वरूप जान सके।

तब गुरुवर उसे यह महत्वपूर्ण ज्ञान देते हैं कि, वह परम आत्मा, वह ब्रह्म तुम ही हो (तत्वमसि)। वह अविनाशी आत्म तत्व तुम ही हो। जिस तरह एक चंद्रमा का प्रतिबिंब जल से भरे अलग अलग पात्रों में अलग अलग प्रतीत होता है वेसे ही सभी ज्ञानी आत्मा है। जो उसी ब्रह्म का स्वरूप हैं। इसी विचारधारा को सदियो तक जन्मानस में अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से तत्कालीन भारतवर्ष में चारो दिशाओं में आदि शंकराचार्य दौरा चार मठ स्थापित किए गए। इनके अलग अलग आचार्य रहे। (विवरण के लिए देखे आचार्य शंकर, tmp महादेवन पुस्तक)। यह आज भी निर्दन्ध रूप से अविकल, अविनाशी सर्वधर्म हिताय ज्ञान गंगा और अनित्य और नित्य में अंतर बता रहे हैं। चारो मठ के आचार्य प्रवर शंकराचार्य की पदवी से युक्त हैं।

भूमण्डलीकृत समय के खतरे और दर्शनशास्त्र :

इस तरह सत्य, यथार्थ और आभासी, अविनाशी में अंतर बताकर अपने जीवन को सफल और सौदेश्य बनाने के भारतीय दर्शन की विचारधारा है। जिसमे सबसे महत्वपूर्ण हैं तर्क और बुद्बिमता क साथ जीवन, जीव,जगत और मिथ्यातत्व को समझाना। यह पद्धति दरअसल हमे स्वांत सुखाय, वसुदेव कुटुम्बकम के भारतीय सिद्धान्त की ओर ले जाती है। दर्शन हमारे वैदिक साहित्य और उसके आम जीवन मे क्रियान्वयन के मध्य सेतु का कार्य करते हैं। जिससे समझ और विमर्श उतपन्न होता है। जिससे मनुष्य बाजारवाद,अर्थव्यवस्था और विचार शून्यता की ओर नही जाएगा।

और यही सब बाजार को, इस उतर आधुनिक समय संधान को रास नही आता। उसे सोचने,विचार करने और अपनी जड़ों पर गर्व करने वाले लोग नही चाहिए। क्योंकि फिर वह उसके फैलाए मिथ्यातत्व को जान जाएंगे। उसमे नही फंसेंगे। नही फसेंगे तो फिर अरबो डॉलर का माल, हथियार कहाँ बेचेंगे? अपार खनिज संपदा, बड़े बड़े माल, कॉल सेंटर्स आदि में काम करने वाले सस्ते मजदूर (जी हाँ, आज लाखो इंजीनियरस की सैलरी सरकारी चपरासी 27500 रूपये प्रति माह और काम बस चंद घण्टे से भी कम हैं। ऊपर से टारगेट पूरा करने का दबाब या फिर बाहर निकाल दिए जाने की लटकती तलवार) कहाँ मिलेंगे? तो ऐसे माहौल में बाजार जो चाहता है, वह ड्राइविंग फोर्स है, करवा लेता है। स्त्रियों के लिए विशेष है उसके पास। वह उन्हें जरा सा यह समझाता है कि तुम्हारे हक और अधिकार और बस वह विदुषी बिना चाल समझे बाजार की अपने पिता,पति के खिलाफ खड़ी हो जाती है। ल्योतार, उत्तर आधुनिकतावादी चिंतक सातवें दशक में कह गए कि हर स्थापित मान्यता, विचार को बाजार नष्ट कर देगा। और वह तुम्हारे ही जैसे वेश में, तुम में से ही होगा।

अब कुछ बातो पर ध्यान दे जो बाजार के बढ़ते प्रभाव को बताती हैं :

1. घर परिवार में बढ़ती अधिकांश सुख सुविधाओं की बहुतायत।

दुष्परिणाम : घरों में बातचीत कम और जो इन चीजों को नही ले पा रहे उनमें उबलता असंतोष जो अपराध के रूप में सामने आता है।

2. मस्तिष्क पर कब्जा, उसे चेतनाशून्य कर देना। TV, एंड्राइड फोन, वेब साइट्स आदि। जिससे व्यक्ति अपनी स्तिथि, अपनी रूट्स, अपनी पिछली पीढ़ी जिससे दूर बाजार ने ही करवा दिया, की तरह बिना इन चीजों के रहने की आदत न अपना ले।
3. किताबो, पढ़ने, चिंतन करने की आदत, अनिवार्यता को समाप्त प्रायः करने की कोशिश। उस समय को TV, Laptop, Whatsapp, Facebook आदि के द्वारा कब्जा कर लेना।
4. सप्रयास यह मन में भर देना की आध्यत्मिक होना आपकी मर्जी नही मजबूरी है। आप उससे कुछ पा नही सकते। (पर कौंन पाना चाहता है? हम अपने मन की शांति और स्थिरता के लिए ध्यान करते हैं।)
5. यह सबसे विचित्र परन्तु सच है कि हमारी भाषा, संस्कृति, मूल्यों की हंसी उड़ाना। सावधानीपूर्वक उसे खत्म कर देना। सोचें आप किसी भरी हुई सभा मे कब और कितनी बार हिंदी में बोले और भारतीयता की बात की?
6. हमारे बुजुर्गों, वह जो सब धर्म, रीति रिवाज और हर आने वाले मोड़ या बाधा को अपने अनुभवो से हमे पार कर देते। जिनके होने मात्र से हम शक्ति महसूस करते, उन्हें हमसे दूर कर दिया। बड़ी ही चालाकी से सुदूर शहरों में नौकरी, (कोई बात नही) लेकिन रहने आदि की जगह इतनी महंगी और छोटी की 2 bhk में ही आधी से अधिक तनख्वाह गई। और दो डिब्बे जैसे कमरे, जिसमे दम घुट जाए। तो राह दिखाने वाले इस नई नीति के आगे अपने गृहनगर में ही।
7. लोक, किसानों, आदिवासियों का जो शिक्षित ही नही हैं, उनका तो इस तेजी से बढ़ते दानव ने वह हाल किया कि बस। उन्हें आत्महत्या करनी पड़ी, तो उधर आदिवासियों को उनकी जंगल, जमीन से बेदखल कर दिया।

अब भारतीय दर्शन जो व्यवहारिकता के धरातल पर हमें तर्कपूर्ण ढंग से बताता है कि यह लोन देकर के भी गाड़ी बंगलो लो, अच्छी, बेहतरीन किताबो की तरफ मत जाओ, घर के बड़ो को घूरे पर फेंको और इन सबके पीछे छुपी बाजार की चाल को मत समझो। और जल्द से जल्द बाजार और उत्तर आधुनिक विचारशून्यता की गिरफ्त में आ जाओ। हुआ यह भी प्रारंभिक दो दशक तक। फिर दूसरे दशक के मध्य से यह बदलाव उठे की दर्शन चाहे वह जीवन हो, शिक्षा, प्रबंधन हो या वैदिक संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन और भाषा दर्शन वह केंद्र में आने लगे।

लोग, खासकर युवा पीढ़ी किताबो और विचारों की तरफ मुड़ने लगी। उधर भारतीय युवा नारी समझ गई कि परिवार में बड़े बुजुर्गों की उपस्तिथि उसी को सुकून, धैर्य और चिंता मुक्त करती है। खासकर जब वह नौकरी भी करती हो।

वेदांत दर्शन की अद्वेत की यह उक्ति यहां सटीक बैठी जो यह कहती है अयमआत्मा ब्रह्म। एकोनविष्ट सः। साथ ही केंद्र सरकार ने स्टार्टअप के माध्यम से देश के काफी युवाओं को प्रोत्साहित किया कि वह अपना उद्धम प्रारम्भ करें।

भारतीय दर्शन cbsc, और सभी राज्य बोर्ड के पाठ्यक्रम में शामिल एक अत्यन्त प्रभावी विषय है। साथ ही सभी राज्यो में दर्शन शास्त्र एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में है। यह स्कोरिंग विषय आईएएस से लेकर चबे सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल है।

निष्कर्ष :

फिर भी कुछ चुनोतियाँ हैं जिन्हें योग्य एजेंसियों को विशेष ध्यान देकर दूर करना होगा। जरूरत इसके प्राध्यापकों के नए जोश और उत्साह से अध्ययन करवाने की है। साथ ही समय के साथ ugc, icpr (भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्) इसके पाठ्यक्रम को आधुनिक स्वरूप भी दे। जिसमे मीडिया दर्शन, सूफीसम, सबसे सबसे महत्वपूर्ण बाजार का दर्शन (philosophy of market), भारतीय संस्कृति और भाषा दर्शन, आदि नए उपविषय

जोड़े जाए। अपने समय और परिवेश को प्राचीन संस्कृति के साथ युक्ति संगत ढंग से देखने वाले इस महत्वपूर्ण विषय दर्शनशास्त्र को दसवीं की परीक्षा में अनिवार्य विषय के रूप में रखा जाए।

वैदिक पीठ की स्थापना अभी बहुत कम जगह हुई है। वजह वहाँ कार्यरत लोग खुद ही उस विषय में आना चाहते हैं जो उन्होंने पढ़ा नही। इसके लिए सीधे ही icpr या ugc अपने स्तर पर आवेदन मंगवाकर नियुक्तियां करें। विषय मे नए से नए शोध की काफी संभावनाएं हैं, उसे भी बढ़ावा मिलेगा। दर्शन शास्त्र ही वह विषय है जो बुद्बिमता से हमे बाजारवाद के मुकाबले खड़ा करके विजयी बनाने का शस्त्र है।

संदर्भ सूची :

1. *Utlisilm bye j-s mill, सुखों में गुणात्मक भेद । जबकि जे बेंथम कहते हैं सुख मिलना चाहिए भले ही वह किसी नकारात्मक बात से भी आ रहा हो।*
2. *ब्रह्मसूत्र, शांकरभाष्य, गीता प्रेस गोरखपुर, वर्ष 1990*
3. *उपाध्याय, बलदेव, (1985), भारतीय दर्शन, चौखम्भा,वाराणसी।*
4. *शर्मा, प्रकाशवती, (2018), कठोपनिषद्, भावार्थ और व्याख्या, ज्ञान गंगा प्रकाशन, जयपुर।*
5. *श्वेताश्वतर उपनिषद्, भाष्य, गीता प्रेस गोरखपुर,1990।*
6. *ऋग्वेद शांकर भाष्य, गीता प्रेस गोरखपुर, पुरुष सूक्त दशम मंडल।*

****